समाज सुधार के संदर्भ में गाँधी जी का योगदान : एक अनुशीलन

शोध पत्र-शिक्षा

* डॉ. हरिशंकर सिंह

प्रस्तावना :- भारतीय समाज विभिन्न समूहों, जातियों तथा वर्गों में विभाजित है । मानव समाज का आधार व्यक्ति है, व्यक्तियों से समाज और समाज से व्यक्तियों का अस्तित्व है । परिवर्तन प्रकृति का नियम है। आधुनिक युग में हमारे समाज में भी सभी क्षेत्रों में परिवर्तन हो रहे हैं । इन परिवर्तनों के बावजूद भी अभी समाज में जाति-पाँति, ऊँच-नीच का भेदभाव, छुआछूत, बाल विवाह, परदा प्रथा, दहेज प्रथा, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी आदि विकृतियां मौजूद हैं । कुछ परम्परागत रूढियों, अंधविश्वासों एवं मान्यताओं के प्रति आज भी मनुष्य की सोच नहीं बदली है। नित्य नूतन परिवर्तन के प्रति लोग आकृष्ट तो हैं लेकिन अभी भी उनके मन में पुरानी अवधारणायें विद्यमान हैं । अगर समाज को प्रगति की राह में आगे ले जाना है तो हम गांधीजी के समाज सुधार संबंधी योगदान को विस्मृत नहीं कर सकते ।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व :- वर्तमान समाज में चारो तरफ मानवता का हनन दृष्टिगोचर हो रहा है । नैतिक पतन अपनी पराकाष्ठा पर है । आजादी के वर्षों बाद भी समाज में दहेज प्रथा, परदा प्रथा, जाति-पाँति का भेदभाव, सम्प्रदायवाद, बाल विवाह आदि कुरीतियां विद्यमान हैं । समाज में अपराधीकरण बढ रहा है । नशाखोरी की वजह से लठ्ठा काण्ड (अहमदाबाद) जैसे प्रकरण हो रहे हैं, समाज में स्त्रियों की दशा अभी भी दयनीय है । चारो तरफ अशांति का वातावरण है । मनुष्य भौतिकता की अंधी दौड में जीवन मूल्यों से विमुख हो गया है । ऐसी परिस्थिति में यदि समाज को सभ्य, शिष्ट, मानवतावादी व प्रगतिवादी बनाना है तो समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा विसंगतियों को खत्म करना होगा, इसके लिये महात्मा गांधी के समाज सुधार संबंधी विचारों को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है ।

शोध समस्या :- वर्तमान समाज जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद आदि विचारों से ग्रसित हो रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप ' वसुधैव कुटुम्बकम ' की भावना क्षीण हो रही है । अभी भी समाज में नारी का शोषण हो रहा है। तमाम कुरीतियों से ग्रसित समाज में अंधविश्वास की भावना पल्लवित- पुष्पित हो रही है । आज के समाज को पथ दर्शन की आवश्यकता है जो मानव जीवन को विभिन्न दिशाओ में अंधविश्वास से उपर उठकर प्रगतिशील बना सके । इस संदर्भ में महात्मा गांधी एक समाज सुधारक एवं विश्वदृष्टा थे । उनसे मानव जीवन का कोई भी वैयक्तिक तथा सामाजिक पहलू अछूता नहीं रहा है, जहां उन्होने एक नई दिशा न दी हो ।

शोध उद्देश्य :- 1. गाँधी जी के ग्रंथो तथा साहित्यों से सामाजिक तथ्यों को विश्लेषित करना । 2. गाँधी जी से सम्बंधित ग्रंथो तथा साहित्यों से समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति उनके विचारों का अध्ययन करना । 3. गाँधी जी के समाज सुधार संबंधी योगदान को विश्लेषित करते हुए, वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का विवेचन करना।

शोध सीमांकन :- इस शोध कार्य में गांधी जी के केवल समाज सुधार सम्बंधी योगदान को आधार बनाया गया है । मुख्य रूप से उनसे संबंधित ग्रंथों तथा साहित्यों का उपयोग करते हुए, उनके समाज सुधार संबंधी योगदान का अध्ययन करना ही प्रस्तुत शोध का सीमांकन है ।

शोध विधि :- अतीत के विचारों में झांककर गाँधी जी के समाज सुधार सम्बंधी योगदान का अध्ययन सर्वेक्षण, प्रयोग या अन्य विधि से नहीं किया जा सकता, इसलिये प्रस्तुत शोध प्रबंध की विधि पुस्तकालय अध्ययन पर आधारित ऐतिहासिक दार्शनिक है जो समस्या समाधान मूलक है ।

शोध उपकरण :-यह शोध अध्ययन दार्शनिक चिन्तन पर होने के कारण पुस्तकालय को प्रमुख स्रोत माना गया है । पुस्तकालय के अंर्तगत आने वाले गांधी जी से संबंधित विशेष ग्रंथो, सारांशो, विश्व कोष, संदर्भ ग्रंथ, लेख, साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक पत्रिकाओं के माध्यम से शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास किया गया है । अतः प्रस्तुत शोध में ग्रंथालय में उपलब्ध स्रोतों को ही शोध उपकरण के रूप मे व्यवहृत किया गया है।

परिणाम एवं चर्चा :-गांधी जी एक कुशल राजनीतिज्ञ ही नही वरन एक महान समाज सुधारक थे, जिनका योगदान जीवन तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अमूल्य है । उनके समाज सुधार संबंधी योगदान को हम निम्नलिखित बिन्दुओं से आंक सकते हैं।

अस्पृश्यता उन्मूलन :-गाँधी जी एक एसे महादृष्टा थे जो छुआछूत तथा जाति-पाँति के भेदभाव में विश्वास नहीं करते थे। इसके लिये उन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त अस्पृश्यता निवारण में विशेष रूचि दिखाई और उद्घोष किया कि जबतक अस्पृश्यता का सम्पूर्ण नाश नहीं हो जाता, तब तक भारतीय स्वतंत्रता अर्थहीन है । गांधी जी ने जोर देकर कहा कि अस्पृश्यता का कोई धार्मिक आधार नहीं है, यह बात सबको समझना चाहिये । उन्होने अस्पृश्यता उन्मूलन के लिये अनेक रचनात्मक कार्य किये। उनके अथक प्रयासों से सन १९२० में हिन्दू मंदिरो में

*रीडर, जे. के. एम. एम एड् कॉलेज, जूनागढ़, गुजरात

हरिजनों (जिनको अस्पृश्य समझा जाता था) को प्रवेश दिया गया। उन्होने असहयोग आन्दोलन अर्थात सत्याग्रह के माध्यम से सभी जाति के लोगों को कन्धे से कंधा मिलाकर काम करने का आग्रह किया, परिणाम स्वरूप जाति पाँति के भेदभाव कम होने लगे।

नारी का स्थान :- गांधी जी के अंतःकरण में स्त्रियों के प्रति अपार श्रद्धा-सम्मान की भावना थी। तत्कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति दयनीय थी, उन्होंने नारियों की स्थिति को सुधारने के लिये और उन्हे परम्परागत कुरीतियों का शिकार बनने से बचाने के लिये सराहनीय प्रयास किया।

स्त्री-पुरूष में समानता पर बल दिया, विधवा पुनर्विवाह की बात कही, इस संदर्भ में उन्होने नवयुवकों को यह सुझाव दिया कि प्रत्येक युवक को यह संकल्प ले लेना चाहिये कि वह विधवा से ही विवाह करेगा और दहेज नहीं लेगा। गांधी जी नारी को पुरूषों की भांति उन्नत अवस्था में देखना चाहते थे, वो यह मानते थे कि नारी मानसिक क्षमता की दृष्टि से पुरूषों से किसी भी तरह कम नहीं है। उन्होने अपने सत्याग्रह में नारियों को पुरूषों की भांति भाग लेने के लिये आमंत्रित किया, परिणाम स्वरूप समाज में जागृति आयी, परदा प्रथा कम होने लगी। समाज में व्याप्त बाल विवाह, दहेज प्रथा, बहुपत्नी विवाह, विधवा पुर्नविवाह आदि कुप्रथाओं के प्रति स्त्रियों मे जागरूकता की भावना का जन्म हुआ। गांधी जी नारी को पुरूष की दासी नहीं वरन उसकी जीवन संगिनी मानते थे। वे मानते थे कि नारी अहिन्सा की मूर्ति है जिसमें कष्ट सहने की अनंत शक्ति विद्यमान है। उनका विचार था कि समाज में पुरूष तथा स्त्री की स्थिति समान होनी चाहिये। नारियों को भी शिक्षित होना चाहिये। यद्यपि पुरूष तथा स्त्री के कार्यक्षेत्र कुछ भिन्न होते हैं लेकिन दोनों की सांस्कृतिक आवश्यकतायें समान होती हैं, इसलिये दोनों को विकास के समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिये। गांधी जी ने स्त्री को पत्नी और माता के अतिरिक्त समाज के निर्माता के रूप में देखा है।

परदा प्रथा :- गांधी जी स्त्रियों के उन्नयन में परदा प्रथा को एक बडी बाधा समझते थे। वो मानते थे कि नारी को घर की चहार दिवारी तक ही सीमित न रखा जाय बल्कि उसे विकास के सारे रास्ते शुलभ कराये जाय। अतः उन्होने परदा प्रथा का विरोध किया और नारियों को समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में सहभागी बनने का आवाह्न किया।

बाल विवाह :- तत्कालीन समाज में बाल विवाह की प्रथा थी गांधी जी इस प्रथा के पक्षधर नही थे। उनका मानना था कि पहले बालक एवं बालिकाओं को पूर्ण रूप से विकसित होने दिया जाय, उसके बाद शादी की बात सोंची जाय। अतः उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया।

नशाखोरी (मद्यपान) :-गांधी जी की विचारधारा सात्विक थी। वे मद्यपान को विषपान से भी अधिक घातक मानते थे, उनका मानना था कि विष तो केवल शरीर की हत्या करता है लेकिन मद्यपान आत्मा का हनन करके मनुष्य को पशु के समान बना देता है, उसका विवेक छीन लेता है। गांधी जी गाँजा, अफीम, चरस, शराब आदि सभी मादक द्रव्यों के सेवन के घोर विरोधी थे। उनका विश्वास था कि मद्यनिषेध से जनता का शारीरिक, मानसिक और नैतिक सभी प्रकार का उत्थान होता है। इसिलिये उनके नेतृत्व में सन १९२६ में मद्यपान बंद करने का आंदोलन शरू किया गया था। गांधी जी ने नशाखोरी को समाप्त करने के अनेक प्रयास किये।

मूर्ति पूजा एवं धर्म :- गांधी जी का धर्म आत्मबोध तथा आत्मज्ञान है। वे मानव सेवा को सबसे बडा धर्म और सत्य को ईश्वर मानते थे। उनके अनुसार धर्म वह आधार है जो हमें परम सत्य से एकरार कराता है, हृदय को निमजल, निःस्वार्थ एवं पवित्र बनाता है, जो सबसे प्रेम करना सिखाता है। इस प्रकार गांधी जी ने धार्मिक संकीर्णता को दूर करने के लिये धर्म को एक नये रूप में प्रस्तुत किया।

साम्प्रदायिक सद्भाव :- गांधी जी साम्प्रदायिक सद्भाव को सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक सभी दृष्टियों से आवश्यक मानते थे। उन्होंने देश में शांति तथा सुव्यवस्था के लिये साम्प्रदायिक एकता के महत्व पर बल दिया। वे सभी धर्मों का समान आदर करते थे। उनका मत था कि यदि भारत में धार्मिक टकराव होगा, साम्प्रदायिक दंगे होंगे तो हमारा देश कभी उन्नति नहीं कर सकेगा। इसलिये उन्होने समाज में सर्व धर्म समभाव की भावना को विकसित करने का प्रयास किया। उन्होने जातिगत, वर्गगत तथा धर्मगत अंधविश्वासों से ऊपर उठकर एक सभ्य शिष्ट समाज की स्थापना पर बल दिया।

निष्कर्ष :- गांधी जी का सर्वोदय सिद्धांत राष्ट्रीय, सामाजिक तथा मानवीय चेतना का विस्तृत सम्बल है, वे सत्य, अहिन्सा तथा प्रेम के पुजारी थे, उन्होने इसी आधार पर समाज सुधार कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने का प्रयास किया। वे समाज के गरीब, निर्धन तथा अपाहिजों के लिये जीवन भर संघर्ष करते रहे। उनके प्रयासों से परम्परागत समाज को एक नया धरातल उपलब्ध हो गया। उनके समाज सुधार संबंधी योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता है। उनकी सामाजिक विचारधारा ने वैचारिक विसंगति, दार्शनिकता, दुरूहता और परम्परागत रूढियों से बंधे समाज को मुक्ति का मार्ग प्रसस्त किया। अंततः हम कह सकते हैं कि गांधी जी एक मनुष्य नहीं वरन एक युग, एक सिद्धांत और एक दर्शन थे, जिनके कार्य एवं विचार वर्तमान समाज के लिये आज भी प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गांधी जी (१९६५)ः नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद. 2. गांधी जी (१९५०)ः व्यापक धर्म भावना, नव जीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद. 3. सुमन रामनाथ : गांधीवाद रूपरेखा, श्री रंजन सेवा प्रेस, इलाहाबाद. 4. कृपलानी कृष्ण : हम सब एक पिता के बालक, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद. 5. शाह, रोहित : गांधी वाणी -३, गुर्जर ग्रंथ रत्न कार्यालय,अहमदाबाद. 6. प्रसाद राजेन्द्र : गांधी जी की देन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली.